पाठ 19

जब मैंने पहली पुस्तक खरीदी

(इस पाठ में लेखक ने जीवन में पुस्तकों के महत्त्व पर प्रकाश डाला है।)

बचपन की बात है। उस समय आर्यसमाज का सुधारवादी आन्दोलन पूरे जोर पर था। मेरे पिता आर्यसमाज रानीमंडी के प्रधान थे और माँ ने स्त्री शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी।

पिता की अच्छी-खासी सरकारी नौकरी थी, बर्मा रोड जब बन रही थी तब बहुत कमाया था उन्होंने। लेकिन मेरे जन्म के पहले ही गाँधी जी के आह्वान पर उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी थी। हम लोग बड़े आर्थिक कष्टों से गुजर रहे थे फिर भी घर में नियमित पत्र-पत्रिकाएँ आती थीं- 'आर्यमित्र', 'साप्ताहिक', 'वेदोदय', 'सरस्वती', 'गृहणी', और दो बाल पत्रिकाएँ खास मेरे लिए - 'बालसखा' और 'चमचम'। उनमें होती थीं परियों, राजकुमारों, दानवों और सुन्दर राजकन्याओं की कहानियाँ और रेखाचित्र। मुझे पढ़ने की चाह लग गयी। हर समय पढ़ता रहता। खाना खाते समय थाली के पास पत्रिकाएँ रखकर पढ़ता। अपनी दोनों पत्रिकाओं के अलावा भी 'सरस्वती' और 'आर्यमित्र' पढ़ने की कोशिश करता। घर में पुस्तकें भी थीं। उपनिषदें और उनके हिन्दी अनुवाद- सत्यार्थ प्रकाश। 'सत्यार्थ प्रकाश' के खंडन-मंडन वाले अध्याय पूरी तरह समझ में नहीं आते थे पर पढ़ने में मजा आता था।

मेरी प्रिय पुस्तक थी स्वामी दयानन्द की एक जीवनी, रोचक शैली में लिखी हुई, अनेक चित्रों से सुसज्जित। वे तत्कालीन पाखंडों के विरुद्ध अदम्य साहस दिखाने वाले अद्भुत व्यक्तित्व थे। कितनी ही रोमांचक घटनाएँ थीं उनके जीवन की जो मुझे बहुत प्रभावित करती थीं। चूहे को भगवान का मीठा खाते देख कर मान लेना कि प्रतिमाएँ भगवान नहीं होती, घर छोड़कर भाग जाना। तमाम तीर्थों, जंगलों, गुफाओं, हिमशिखरों पर साधुओं के बीच घूमना और हर जगह इसकी तलाश करना कि भगवान क्या है ? सत्य क्या है ? जो भी समाज विरोधी, मनुष्य विरोधी मूल्य हैं, रूढ़ियाँ हैं उनका खंडन करना और अन्त में अपने हत्यारे को क्षमा कर उसे सहारा देना। यह सब मेरे बालमन को बहुत रोमांचित करता।

माँ स्कूली पढ़ाई पर जोर देतीं। चिन्तित रहतीं कि लड़का कक्षा की किताबें नहीं पढ़ता। पास कैसे होगा। कहीं खुद साधु बनकर फिर से भाग गया तो ? पिता कहते जीवन में यही पढ़ाई काम आयेगी पढ़ने दो। मैं स्कूल नहीं भेजा गया था, शुरू की पढ़ाई के लिए घर पर मास्टर रक्खे गये थे। पिता नहीं चाहते थे कि नासमझ उम्र में मैं गलत संगति में पड़ कर गाली-गलौज सीखूँ, बुरे संस्कार ग्रहण करूँ अतः स्कूल में मेरा नाम तब लिखाया गया, जब मैं कक्षा दो तक की पढ़ाई घर पर कर चुका था। तीसरे दर्जे में भर्ती हुआ। उस दिन शाम को पिता उँगली पकड़ कर मुझे घुमाने ले गये। लोकनाथ की एक दुकान से ताजा अनार का शर्बत मिट्टी के कुल्हड़ में पिलाया और सर पर हाथ रख कर बोले - 'वायदा करो कि पाठ्यक्रम की किताबें भी इतने ही ध्यान से पढ़ोगे, माँ की चिन्ता मिटाओगे। उनका आशीर्वाद था या मेरा जी तोड़ परिश्रम कि तीसरे, चैथे में मेरे अच्छे नम्बर आये और पाँचवें दर्जे में तो मैं फस्र्ट आया। माँ ने आँसू भर कर गले लगा लिया, पिता मुस्कुराते रहे, कुछ बोले नहीं।

अंग्रेजी में मेरे नम्बर सबसे ज्यादा थे, अतः स्कूल से इनाम में दो अंग्रेजी किताबें मिली थीं। एक मंे दो छोटे बच्चे घोंसलों की खोज में बागों और कुंजों में भटकते हैं और इस बहाने पक्षियों की जातियाँ, उनकी बोलियाँ, उनकी आदतों की जानकारी उन्हें मिलती है। दूसरी किताब थी 'ट्रस्टी द रग' जिसमें पानी के जहाजों की कथाएँ थीं-कितने प्रकार के होते हैं,

कौन-कौन सा माल लाद कर लाते हैं, कहाँ ले जाते हैं, नाविकों की जिन्दगी कैसी होती है, कैसे-कैसे जीव मिलते हैं, कहाँ ह्वेल होती है, कहाँ शार्क होती है।

इन दो किताबों ने एक नई दुनिया का द्वार मेरे लिए खोल दिया। पक्षियों से भरा आकाश और रहस्यों से भरा समुद्र। पिता ने अलमारी के एक खाने में अपनी चीजें हटाकर जगह बनायी और मेरी दोनों किताबें उस खाने में रख कर कहा, 'आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का। यह तुम्हारी लाइब्रेरी है।' यहाँ से आरम्भ हुई उस बच्चे की लाइब्रेरी। आप पूछ सकते हैं कि- किताबें पढ़ने का शौक तो ठीक, किताबें इकट्ठी करने की सनक क्यों सवार हुई, उसका कारण भी बचपन का एक अनुभव है।

इलाहाबाद भारत के प्रख्यात शिक्षा केन्द्रों में एक रहा है। ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा स्थापित पब्लिक लाइब्रेरी से लेकर महामना मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित भारती भवन तक। अपने मुहल्ले में एक लाइब्रेरी थी हरि भवन। स्कूल से छुट्टी मिली कि मैं उसमें जाकर जम जाता था। पिता दिवंगत हो चुके थे, लाइब्रेरी का चन्दा चुकाने का पैसा नहीं था, अतः वहीं बैठकर किताबें निकलवा कर पढ़ता रहता था। अपने छोटे से हरि भवन में खूब उपन्यास थे। वहीं परिचय हुआ बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय की 'दुर्गेशनन्दिनी', 'कपाल कुंडला' और 'आनन्द मठ' से। टॉलस्टाय की 'अन्ना करेनिना' , विक्टर ह्यूगो का 'पेरिस का कुबड़ा', गोर्की की 'मदर' और सबसे मनोरंजक सर्वा-रीज का 'विचित्र वीर' (यानी डान क्विक्जोट) हिन्दी के ही माध्यम से सारी दुनिया के कथा पात्रों से मुलाकात करना कितना आकर्षक था।

लाइब्रेरी खुलते ही पहुँच जाता और जब लाइब्रेरियन शुक्ल जी कहते कि बच्चा अब उठो, पुस्तकालय बन्द करना है तब बड़ी अनिच्छा से उठता। जिस दिन कोई उपन्यास अधूरा छूट जाता, उस दिन मन में कसक होती कि काश इतने पैसे होते कि सदस्य बन कर किताब ईश्यू करा लाता, या काश इस किताब को खरीद पाता तो घर में रखता। एक बार पढ़ता, दो बार पढ़ता, बार-बार पढ़ता पर जानता था कि यह सपना ही रहेगा। भला कैसे पूरा हो पायेगा। पिता के देहावसान के बाद तो आर्थिक संकट इतना बढ़ गया कि पूछिए

मत, फिर भी मैंने जीवन की पहली साहित्यिक पुस्तक अपने पैसों से कैसे खरीदी, यह आज तक याद है।

उस साल इण्टरमीडिएट पास किया था। पुरानी पाठ्यपुस्तकें बेच कर बी0ए0 की पाठ्य पुस्तकें लेने सेकेंड हैंड बुक शॉप पर गया। उस बार जाने कैसे पाठ्यपुस्तकें खरीद कर भी दो रुपये बच गये थे। सामने के सिनेमाघर में 'देवदास' लगी थी न्यू थियेटर्स वाले। बहुत चर्चा थी उसकी।

लेकिन मेरी माँ को सिनेमा देखना बिल्कुल नापसन्द था। माँ का मानना था उसी से बच्चे बिगड़ते हैं, लेकिन उसके गाने सिनेमा गृह के बाहर बजते थे। उसमें सहगल का एक गाना था 'दु:ख के दिन अब बीतत नाहीं' उसे अक्सर गुनगुनाता रहता था। कभी-कभी गुनगुनाते आँखों से आँसू भी आ जाते थे जाने क्यों?

एक दिन माँ ने सुना। माँ का दिल तो आखिर माँ का दिल। एक दिन बोली-दु:ख के दिन बीत जायेंगे बेटा, दिल इतना छोटा क्यों करता है, धीरज से काम ले। जब उन्हें मालूम हुआ कि यह तो फिल्म 'देवदास' का गाना है, तो सिनेमा की घोर विरोधी माँ ने कहा- अपना मन क्यों मारता है, जाकर पिक्चर देख आ। पैसे मैं दे दूँगी। मैंने माँ को बताया कि किताबें बेच कर दो रुपये मेरे पास बचे हैं।' वे दो रुपये लेकर माँ की सहमति से फिल्म देखने गया। पहला शो छूटने में देर थी, पास में अपनी परिचित किताब की दुकान थी। वहीं चक्कर लगाने लगा। सहसा देखा काउन्टर पर एक पुस्तक रक्खी है- 'देवदास', लेखक-शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय, दाम केवल एक रुपया। मैंने पुस्तक उठा कर उलटी-पलटी तो पुस्तक-विक्रेता बोला- 'तुम विद्यार्थी हो। यहीं अपनी पुस्तकें बेचते हो। हमारे पुराने ग्राहक हो। तुमसे अपना कमीशन नहीं लूँगा। केवल दस आने में यह किताब दे दूँगा।' मेरा मन पलट गया। कौन देखे डेढ़ रुपये में पिक्चर ? दस आने में 'देवदास' खरीदी। जल्दी-जल्दी घर लौट आया और दो रुपये में से बचे एक रुपया छः आना माँ के हाथ में रख दिये।'

अरे तू लौट कैसे आया ? पिक्चर नहीं देखी ?' माँ ने पूछा। 'नहीं माँ! फिल्म नहीं देखी, यह किताब ले आया देखो।' माँ की आँखों में आँसू आ गये। खुशी के थे, या दुःख के यह नहीं मालूम। वह मेरे अपने पैसों से खरीदी, मेरी अपनी निजी लाइब्रेरी की पहली किताब थी।

- धर्मवीर भारती

पद्मश्री धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर सन् 1926 ई0 को इलाहाबाद मंे हुआ था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम0 ए0, डी0 फिल0 करने के पश्चात् ये वहीं हिन्दी-विभाग में प्राध्यापक नियुक्त हुए, फिर धर्मयुग साप्ताहिक पत्रिका के सम्पादक होकर मुम्बई चले गये। धर्मवीर भारती नयी कविता के श्रेष्ठ कवि, उपन्यासकार, कहानीकार और निबन्धकार हैं। 'अन्धायुग', 'कनुप्रिया', 'सातगीत वर्ष', 'ठंडा लोहा', इनके काव्यसंग्रह हैं। 'गुनाहों का देवता' और 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' जैसे इनके उपन्यासों की हिन्दी में बहुत चर्चा हुई है। 'गुलकी बन्नो', 'बन्द गली का आखिरी मकान' आदि कहानियों का हिन्दी की नयी कहानी में विशिष्ट स्थान है। इनका निधन 4 सितम्बर सन् 1997 ई0 को मुम्बई में हुआ।

शब्दार्थ

आह्वान = बुलावा। अदम्य = जो दबाया न जा सके, प्रबल। रोमांचित = पुलकित, जिसके रोयें खड़े हों। टॉलस्टाय = रूसी कथाकार। विक्टर ह्यूगो = फ्रांसीसी कथाकार। मैक्सिम गोर्की = एक रूसी कथाकार। ईश्यू कराना = निर्गत कराना।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. आर्य समाज संस्था ने भारतीय समाज मंे फैली रूढ़ियों एवं आडम्बरों को दूर करने का प्रयास किया। वह भारत का नव जागरण काल था। आर्य समाज के अतिरिक्त ब्रह्म समाज, प्रार्थनासमाज, थियोसॉफिकल सोसाइटी जैसी अनेक संस्थाओं ने भी समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया था। इन संस्थाओं के संस्थापकों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

2. वर्तमान समय में प्रकाशित होने वाली किन्हीं चार बाल पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

3. पाठ में आई पुस्तकों को अपने पुस्तकालय से खोजकर पढ़िए।

विचार और कल्पना

1. 'अपने बचपन से जुड़ी किसी घटना/अनुभव' पर दस वाक्य लिखिए।

2. अपने द्वारा पुस्तकालय से पढ़ी गई किसी किताब के बारे में लिखिए- कि औरों को उस

किताब को क्यों पढ़ना चाहिए ?

संस्मरण से

1. बचपन में लेखक के घर कौन-कौन सी पत्रिकाएँ आती थीं ?

2. बचपन में लेखक को स्वामी दयानन्द जी की जीवनी क्यों पसन्द थी ?

3. लेखक को अंग्रेजी में सबसे अधिक अंक पाने के बाद उपहार में कौन-सी दो पुस्तकें मिली थीं और उनसे लेखक को क्या जानकारी प्राप्त हुई ?

4. पुस्तकों को पढ़ना एक अच्छी आदत है। बच्चों का मन कहानियों में खूब लगता है। आजकल दूसरी भाषाओं के उपन्यास और कहानियों के हिन्दी अनुवाद भी उपलब्ध हैं। नीचे लिखी पुस्तकों के लेखकों के नाम बताइए।

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम
आनन्द मठ	.....
अन्ना करेनिना	.....
पेरिस का कुबड़ा	.....
मदर	.....
विचित्र वीर	.....
सत्यार्थ प्रकाश	.....
सूरज का सातवाँ घोड़ा	.....
देवदास	.....
कपाल कुण्डला	.....

5. लेखक ने देवदास फिल्म क्यों नहीं देखी ?

6. क्या आपने कोई फिल्म देखी हैं ? कौन सी ? उस फिल्म में आपको क्या अच्छा लगा,क्या नहीं ?

भाषा की बात

1. 'वेदोदय' तथा 'दुर्गेश' शब्द क्रमशः वेद$उदय तथा दुर्ग$ईश की सन्धि से बने हैं। इसमें अ$उ=ओ तथा अ$ई=ए हो गया है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विग्रह कीजिए -

वीरोचित, देवोचित, रमेश, सुरेश।

2. इस पाठ में लाइब्रेरी, इंडिया, थियेटर, पिक्चर आदि अंग्रेजी के शब्द आये हैं। इनके लिए प्रयुक्त होने वाले हिन्दी शब्दों को लिखिए।

3. नीचे कुछ वाक्य दिये गये हैं, इनमें साधारण, संयुक्त तथा मिश्रित-तीनों प्रकार के वाक्य हैं। उन्हें पहचान कर उनके सामने वाक्य का प्रकार लिखिए-

(क) मेरे पिता आर्य समाज, रानी मंडी के प्रधान थे और माँ ने स्त्री शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी।

(ख) माँ स्कूली पढ़ाई पर जोर देती थीं।

(ग) जल्दी -जल्दी घर लौट आया और दो रुपये में से एक रुपया छह आना माँ के हाथ में रख दिये।

(घ) उनका आशीर्वाद था या मेरा जी-तोड़ परिश्रम कि तीसरे, चैथे में मेरे अच्छे नम्बर आये और पाँचवें दर्जे में तो मैं फस्र्ट आया।

(ङ) उस साल इण्टरमीडिएट पास किया था।

4. निम्नलिखित वाक्य को ध्यान से पढ़िए और बताइए कि इसमें कर्ता, क्रिया, कर्म में से किसका लोप है-

लोकनाथ की एक दुकान से ताजा अनार का शर्बत मिट्टी के कुल्हड़ में पिलाया और सर पर हाथ रखकर बोले- वायदा करो कि पाठ्यक्रम की किताबें भी इतने ही ध्यान से पढ़ोगे, माँ की चिन्ता मिटाओगे।

इसे भी जानें

विश्व का सबसे बड़ा पुस्तकालय 'नेशनल लाइब्रेरी' कीव, रूस में है।